

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, चर्च और अंतिम चीजें, सत्र 7, चर्च का ऐतिहासिक धर्मशास्त्र

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा चर्च के सिद्धांतों और अंतिम बातों पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 7 है, चर्च का ऐतिहासिक धर्मशास्त्र।

हम चर्च के सिद्धांतों पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं।

बाइबिल की कहानी, दोनों नियमों में कुछ मुख्य अंश जो परमेश्वर के लोगों से संबंधित हैं, चर्च की तस्वीरें, विशेष रूप से नए नियम में, और फिर पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों पर एक बहुत लंबा खंड के साथ काम करने के बाद अब हम अपना ध्यान ऐतिहासिक धर्मशास्त्र की ओर मोड़ते हैं। ऐतिहासिक धर्मशास्त्र इस बात का अध्ययन है कि चर्च ने सदियों से बाइबिल की शिक्षाओं को कैसे समझा है। इसे सिद्धांत का इतिहास भी कहा जाता है, और यह बाइबिल का स्थान नहीं लेता है, लेकिन यह एक क्षेत्र है, इसे ध्यान में रखें, एक व्यवस्थित धर्मशास्त्र तैयार करने में एक अनुशासन, जो निश्चित रूप से व्याख्या और बाइबिल धर्मशास्त्र पर आधारित होना चाहिए, लेकिन यह ऐतिहासिक धर्मशास्त्र को भी ध्यान में रखता है।

हम चर्च के सिद्धांत के इतिहास में कुछ मुख्य बिंदुओं पर चर्चा करना चाहते हैं। ये हैं संत साइप्रियन, कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद का पंथ, संत ऑगस्टीन के कुछ योगदान, बोनिफेस VIII और उनका विशेष लेखन यूनम सैक्टम, जिसने रोमन चर्च के लिए अद्भुत शक्ति का दावा किया, विक्लिफ, जान हुस, ऑक्सबर्ग कन्फेशन, स्कॉट्स कन्फेशन, बेल्जिक कन्फेशन, और फिर हम वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ फेथ के साथ समाप्त करेंगे। साइप्रियन, साइप्रियन एक उत्तरी अफ्रीकी थे।

वह संत ऑगस्टीन की तरह ही बयानबाजी के शिक्षक थे, और उनका धर्मांतरण हुआ और उन्होंने चर्च में प्रभु की सेवा की, और कार्थेज के बिशप के पद तक पहुंचे। उनकी तिथियां लगभग 2000 से 210 हैं, और उनकी जन्म तिथि 258 है, जो उनकी मृत्यु के समय के लिए अधिक निश्चित तिथि है। वह टर्टुलियन के कद के धर्मशास्त्री नहीं हैं, जिनका वह सम्मान करते थे और यहां तक कि श्रद्धा भी रखते थे, लेकिन वह एक पादरी और नेता थे, और पादरी और विशेष रूप से विभाजनकारी समस्याओं के उनके उपचार ने उन्हें न केवल अपने समय में बल्कि उनमें से कुछ मुद्दों को जारी रखते हुए प्रभावशाली बना दिया।

समस्या चर्च में उत्पन्न हुई, खासकर तब जब रोमन सम्राट चर्च के उत्पीड़क थे। समस्या यह थी कि जो लोग चूक गए थे, उन्हें बुलाया गया था। उत्पीड़न के दौरान मसीह को अस्वीकार करने वाले लोगों के साथ चर्च को कैसा व्यवहार करना चाहिए? चर्च को उनके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए? यह हर बड़े उत्पीड़न में एक समस्या थी, जिसमें डेसियन उत्पीड़न भी शामिल है।

साइप्रियन इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उन्होंने लोगों को वापस स्वीकार किया, चूक को स्वीकार किया और उन्हें कई तरह के पश्चाताप करने की अनुमति दी, जिससे उनके और उनके साथी नेताओं के अनुमान में उनके सच्चे पश्चाताप का प्रदर्शन हुआ। उन्होंने जोर दिया, उन्होंने दिन के अंत में स्थापित किया, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि चर्च की एकता बिशपों में अधिक थी, न कि धार्मिक। नोवाटियन, चूक करने वालों का नोवाटियनवाद, चूक के कारण यह विभाजन हुआ, उन लोगों के बीच यह विवाद हुआ जो अपनी जमीन पर खड़े थे और जो नाराज थे।

आप जानते हैं, मेरे पादरी ने मसीह के लिए अपनी जान दे दी। आपके पादरी भाग गए। खैर, कभी-कभी जो भाग गए, उन्होंने कहा, अगर सभी पादरी मर गए, तो कौन इस तरह पादरी बनेगा? यह बहुत मुश्किल स्थिति थी, और इसका कोई आसान जवाब नहीं था। लेकिन वैसे भी, मैंने जो संदर्भ बताया है, उसके अनुसार साइप्रियन की कुछ बातें, एक मोटा संदर्भ, हम बेहतर समझ सकते हैं।

उन्होंने कहा कि नहीं, उनके पिता के लिए ईश्वर नहीं हो सकता, क्योंकि उनकी माँ के लिए चर्च नहीं है। शायद यही उनका सबसे महत्वपूर्ण लेखन है, जो चर्च की एकता पर आधारित है, जिसमें चर्च के महत्व पर जोर दिया गया है। निश्चित रूप से, व्यक्तियों ने उद्धार पाने के लिए मसीह में विश्वास किया, लेकिन साइप्रियन की नज़र में उनका चर्च से संबंधित होना बहुत महत्वपूर्ण है।

वह अपने पिता के लिए ईश्वर को नहीं पा सकता, जिसकी माँ के लिए चर्च नहीं है। वह समकालीन लोगों की उस घटना को नहीं समझ सकता था जो ईसाई होने का दावा करते हैं और चर्च से संबंधित नहीं हैं। यह समझना उसके लिए बहुत असंभव होगा।

अपने पत्रों में, पत्र 73, खंड 21, एक और प्रसिद्ध कहावत है कि चर्च के बाहर कोई उद्धार नहीं है। इसलिए एक पादरी और समस्या समाधानकर्ता के रूप में समस्याओं का सामना करते हुए, उन्होंने विभाजन की उस कठिन समस्या से निपटने के लिए धर्मशास्त्रीय सिद्धांतों से भी अधिक बिशपों पर जोर दिया और इस बात पर जोर दिया कि उत्पीड़न के समय में चर्च उन लोगों के साथ कैसा व्यवहार करता है जिन्होंने मसीह को अस्वीकार कर दिया, जिन्होंने बाइबल की अपनी प्रतियां सौंप दीं, इत्यादि। 381 का कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन पंथ उसी वर्ष कॉन्स्टेंटिनोपल की पहली परिषद से आता है।

इसे 325 में निकेया के बाद ईसाई चर्च की दूसरी विश्वव्यापी परिषद के रूप में मान्यता प्राप्त है। वास्तव में, निकेया ने मसीह के देवता की पुष्टि की और एरियस के खिलाफ अथानासियस की पुष्टि की, लेकिन एरियनवाद खत्म नहीं हुआ। और 381 में इस परिषद ने पूर्व में साम्राज्य में एरियन राजनीतिक और धार्मिक प्रभुत्व के 50 साल, पांच शून्य वर्ष, का अंत किया।

कॉन्स्टेंटिनोपल की पहली परिषद ने निकेन रूढ़िवाद की बहाली और निकेन रूढ़िवाद के विस्तार की बात की। निकेया ने एरियस का विरोध किया, जिसने कहा कि मसीह पहला प्राणी था जिसके माध्यम से ईश्वर ने बाकी सब कुछ बनाया। वह ईश्वर के बराबर नहीं है।

वह एक सृजित प्राणी है, लेकिन उसने पवित्र आत्मा के सिद्धांत के साथ बहुत कुछ नहीं किया। निकेया की पहली परिषद ने निकेई रूढ़िवाद के महत्व को बहाल किया और पवित्र आत्मा को शामिल करने के लिए उस रूढ़िवाद को भी बढ़ाया। यानी, निकेई रूढ़िवाद की बहाली और न्यूमेटोलॉजिकल विस्तार है।

उस संदर्भ में, 381 का कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन पंथ बहुत प्रसिद्ध कथन देता है कि विश्वास के स्वीकारोक्ति के हिस्से के रूप में, हम एक पवित्र कैथोलिक और प्रेरित चर्च में विश्वास करते हैं। उन चार विशेषणों से संज्ञाएँ, एकता, पवित्रता या पवित्रता, और कैथोलिकता प्राप्त होती हैं, यह रोम की बात नहीं करता है; यह चर्च और प्रेरितता की सार्वभौमिकता की बात करता है। एक पवित्र कैथोलिक और प्रेरित चर्च ने आधार के रूप में, पंथ के अनुसार, हम पंथ और स्वीकारोक्ति को प्रतीक कहते हैं।

इसलिए, प्रतीकात्मक रूप से कहें तो, कॉन्स्टेंटिनोपल और उसके पंथ ने शब्दावली दी जिससे चर्च की चार विशेषताएँ सामने आईं। हम विशेषताओं और चिह्नों दोनों पर चर्चा करेंगे। जैसा कि यह संकेत देता है, विशेषताएँ पितृसत्तात्मक हैं।

वे पिताओं के पास वापस जाते हैं, जिन्होंने चर्च को परिभाषित करने में मदद की। चर्च एक चर्च है। चर्च पवित्र है क्योंकि लोग मसीह में विश्वास करते हैं और फिर प्रभु के लिए जीते हैं।

यह जहाँ भी है कैथोलिक है। यह पृथ्वी पर सार्वभौमिक चर्च का हिस्सा है, और यह प्रेरितिक है। हम देखेंगे कि रोम और सुधारकों के पास उस अभिव्यक्ति के अर्थ के संदर्भ में बहुत अलग-अलग अर्थ थे।

अंत में, प्रोटेस्टेंटवाद कहता है कि यह पीटर से किसी तरह का वंश नहीं है, बल्कि प्रेरितों की शिक्षा का पालन है जो एक चर्च को प्रेरित बनाता है। हम एक पवित्र कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च में विश्वास करते हैं। हम उन शब्दों और उनके निहितार्थों पर फिर से विचार करेंगे।

संत ऑगस्टीन, 354 से 430, उनकी तिथियाँ ठोस हैं। और ईसाई चर्च के पहले सैकड़ों और सैकड़ों वर्षों में कोई और अधिक प्रभावशाली व्यक्ति नहीं था। लूथर और कैल्विन दोनों उन्हें श्रेय देते हैं और कहते हैं कि उन्होंने सुसमाचार के बारे में उनकी समझ को फिर से खोजा।

यह सच है, कम से कम रूपरेखा के रूप में, कि उन्होंने अपने दृष्टिकोणों को और आगे बढ़ाया और स्पष्ट किया। लेकिन कैल्विन ने प्रसिद्ध रूप से कहा कि वह अपना पूरा धर्मशास्त्र ऑगस्टीन से प्राप्त कर सकता है। और ऑगस्टीन ने चर्च के बारे में बहुत सी बातें कहीं।

यहाँ कुछ ऐसे बिंदु दिए गए हैं, जिन पर हम अपने सर्वेक्षण में सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक धार्मिक बिंदुओं पर चर्चा करेंगे। ईसाई तो बहुत हैं, लेकिन मसीह एक ही है। ईसाई स्वयं, अपने मुखिया के साथ, क्योंकि वह स्वर्ग में चढ़ गया है, एक मसीह बनाते हैं।

यह ऐसा मामला नहीं है कि वह एक है और हम अनेक हैं, बल्कि हम जो अनेक हैं, उसमें एकता है। इसलिए, एक मनुष्य मसीह है, जो सिर और शरीर से मिलकर बना है। यह भजन संहिता पर

संत ऑगस्टीन की टिप्पणी, भजन 127 और पद 3 पर उनकी टिप्पणी से है। वह जो कर रहा है वह चर्च को मसीह के शरीर के रूप में परिभाषित करना है, जो मसीह के साथ एकता के संदर्भ में सिर है।

बेशक, अन्य मामलों में, हम बहुत से हैं, लेकिन इस अर्थ में, यद्यपि हमारे पास बहुत से अंग हैं, हम एक शरीर का हिस्सा हैं। और मसीह से जुड़े होने के कारण, हम एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। और सिर और शरीर की वह तस्वीर, मैं इसे इस तरह से कहूँगा।

रोमियों और 1 कुरिन्थियों में, वह छवि शरीर-जीवन, सदस्यों के एक दूसरे से संबंध की बात करती है। इसी पर जोर दिया गया है। इफिसियों और कुलुस्सियों में, मुखिया के रूप में मसीह की छवि इस बात को ध्यान में रखती है कि वह कलीसिया के जीवन का स्रोत है।

वह चर्च का प्रभु है। और हमेशा की तरह, ऑगस्टीन के शब्दों ने उसके बाद चर्च के सैकड़ों-सैकड़ों वर्षों के इतिहास को प्रभावित किया। फिर भी, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि वास्तविक व्यवहार में वह एक पादरी थे।

चर्च एक उद्घरण है, अच्छे और बुरे लोगों का मिश्रित समूह। यह ईसाई सिद्धांत पर उनके प्रसिद्ध लेखन में है। यदि आप चर्चों, कैथोलिक चर्च और शायद रोम को समझना चाहते हैं, लेकिन जितना रोमन होने जा रहा है, उतना नहीं, तो ईसाई सिद्धांत पर चर्च के 400 ईस्वी के आसपास के बुनियादी विचारों से शुरुआत करना एक अच्छी जगह है।

बयानबाजी के शिक्षक ऑगस्टीन ने इसे छोड़ दिया क्योंकि उन्होंने कहा, मैं लोगों को धोखा देने के लिए चालाक वकीलों को क्षमताएं दे रहा था। इस पुस्तक में, वह अंत में उपदेशशास्त्र के बारे में बात करते हैं। इसलिए, वह एक शिक्षक के रूप में अपने बयानबाजी, बयानबाजी प्रशिक्षण और अनुभव का कुछ उपयोग करते हैं।

लेकिन सबसे पहले, वह चर्च की मान्यताओं के बारे में बात करता है। वास्तव में, ईसाई सिद्धांत हेर्मेनेयुटिक्स के अध्ययन के रूप में प्रसिद्ध है। वह संकेतों और उनके अर्थों के बारे में बात करता है।

यह एक सरल लेकिन गहन लेख है जो ईसाईयों के विश्वासों का सारांश प्रस्तुत करता है, तथा हमें बाइबल की व्याख्या के लिए कुछ सिद्धांत सिखाता है। फिर, बयानबाजी का शिक्षक उपदेशशास्त्र का शिक्षक बन जाता है, तथा अपने छात्रों और पाठकों को सिखाता है कि चर्च क्या विश्वास करता है, उसे कैसे संप्रेषित किया जाए। इसलिए, वैसे, ईसाई सिद्धांत पर, खंड तीन, उपखंड 45, वह जगह है जहाँ वह ऐसा कहता है।

मिश्रित कंपनी शिक्षण। यह पूरे समय कायम रहेगा, सिवाय एनाबैपटिस्ट के, जो दावा करते हैं कि उनके पास पूरी तरह से शुद्ध चर्च है। लेकिन रोम और सुधारकों दोनों के लिए यह दिन आगे बढ़ा।

इसलिए, उन्होंने अन्यथा सिखाया, चर्च के एकमात्र सच्चे सदस्य, क्योंकि यह एक मिश्रित निकाय है। ठीक है। और अच्छे और बुरे लोग हैं।

और आप हमेशा यह निर्धारित नहीं कर सकते कि वे क्या हैं, वे क्या हैं, और कौन से विशेष व्यक्ति हैं। चर्च के एकमात्र सच्चे सदस्य, उद्धारण, चुने हुए लोगों की निश्चित संख्या हैं। यह बपतिस्मा पर उनके ग्रंथ से है।

धारा पांच, उपधारा 38. तो, जैसा कि हम बाद में देखेंगे.

संघर्ष के समय और चर्च के भीतर से अस्थिर होने के समय, बाहर से उत्पीड़न नहीं, बल्कि गिरावट में होने, सुसमाचार को छिपाए जाने आदि के समय। कुछ पूर्व-सुधारकों, विक्लिफ और हस ने पूर्वनियति में व्यक्त ईश्वर की संप्रभुता में शरण ली क्योंकि उन्होंने कहा कि बाहरी तौर पर, बाहरी तौर पर, चर्च एक गड़बड़ है। ऑगस्टीन ऐसा नहीं कह रहे हैं।

लेकिन हस, विक्लिफ और फिर लूथर के अनुमान के अनुसार, मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च, दो सौ साल बाद, आश्चर्यजनक रूप से, उनसे काफी पहले था। यह ईश्वर के सच्चे लोग हैं जिन्हें ईश्वर ने चुना है और जिन्हें ईश्वर जानता है। चर्च कभी भी उस चर्च को विफल नहीं करेगा।

परमेश्वर के चुने हुए लोगों की छिपी हुई संख्या, कुछ ऐसा ही। और फिर, हम ऑगस्टीन के विचार के महत्व पर अधिक जोर नहीं दे सकते। यह युगों-युगों से, सुधार के माध्यम से गूंजता रहा है, इसलिए जो ईसाई अब खुद को कैल्विनिस्ट के रूप में पहचानते हैं, वे वास्तव में ऑगस्टीनियन कैल्विनियन परंपरा में हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है। बोनिफेस एक पोप थे, उन्हें बोनिफेस नाम के अन्य पोपों से अलग करने के लिए। तकनीकी रूप से, वह बोनिफेस VIII हैं।

यूनन सैंक्टम, एक पवित्र संस्था या चर्च, कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन पंथ की तरह लगता है और जानबूझकर डिज़ाइन किया गया है। वह इस अद्भुत कथन के लिए पंथीय अधिकार, पंथीय पृष्ठभूमि और अधिकार का दावा करता है, जिसे 1302 में प्रकाशित किया गया था। यहाँ इतिहास के माध्यम से रोमन कैथोलिक चर्च का पता लगाया गया है।

रोम के दावे बढ़ते ही चले गए। रोमन कैथोलिक दृष्टिकोण से यह एक उच्च बिंदु का प्रतिनिधित्व करता है। हम विश्वास के कारण विश्वास करने और उसे बनाए रखने के लिए बाध्य हैं।

हम दृढ़ता से मानते हैं और ईमानदारी से स्वीकार करते हैं कि एक पवित्र कैथोलिक चर्च और एक प्रेरितिक चर्च है। और आप बेहतर मानें कि उनका मतलब रोमन कैथोलिक है, जैसा कि आप देखेंगे। और इस चर्च के बाहर, न तो मोक्ष है और न ही पापों की क्षमा।

खैर, हम सिर्फ कॉन्स्टेंटिनोपल ही नहीं सुनते, बल्कि साइप्रियन भी सुनते हैं। और अब पोप बोनिफेस का मतलब पृथ्वी पर इस रोमन कैथोलिक संस्था से बाहर है; कोई मुक्ति नहीं है। न ही इस एकमात्र चर्च के पापों की क्षमा है।

एक शरीर और एक सिर है, राक्षस की तरह दो सिर नहीं। अर्थात्, मसीह ही एकमात्र सिर और मसीह प्रतिनिधि है। पृथ्वी पर उसका प्रतिनिधि पीटर और पीटर का उत्तराधिकारी है।

इसलिए, यदि यूनानी या अन्य लोग कहते हैं कि वे पीटर और उसके उत्तराधिकारियों के प्रति प्रतिबद्ध नहीं थे, तो वे अनिवार्य रूप से स्वीकार करते हैं कि वे मसीह की भेड़ों में से नहीं हैं। वह 1054 की महान व्यवस्था की ओर इशारा कर रहा है, जिसमें पूर्वी रूढ़िवादी चर्च रोम से अलग हो गए थे, और कॉन्स्टेंटिनोपल के कुलपति और रोम में पोप दोनों ने एक दूसरे पर निंदा के अभिशाप जारी किए थे। या तो आप हंसते हैं, या आप कभी-कभी रोते हैं।

अगर संभव होता तो वे एक दूसरे को बहिष्कृत कर देते। और यहाँ, बोनिफेस रूढ़िवादी चर्च को विधर्मी चर्च मानता है। क्यों? यह रोम का नहीं है।

और रोमन चर्च तो चर्च ही है। उनका बाइबिल प्रमाण यह है कि एक रोमन कैथोलिक चर्च है। प्रभु, उनका मतलब यीशु से है, जॉन में कहते हैं, एक झुंड और एक चरवाहा है।

जाहिर है, वह रोमन कैथोलिक चर्च की संस्था के बारे में बात कर रहे हैं जैसा कि 1302 ई. में अस्तित्व में था। मुझे ऐसा नहीं लगता। बल्कि, जॉन 10 में यीशु परमेश्वर द्वारा यहूदी विश्वासियों, मूल विश्वासियों के साथ-साथ गैर-यहूदियों को भी चर्च में लाने के बारे में बात कर रहे हैं।

और हम सुसमाचार के शब्दों से सीखते हैं। यहाँ कुछ और झूठी व्याख्याएँ हैं। हम सुसमाचार से सीखते हैं कि इस चर्च में और इसकी शक्ति में दो तलवारें हैं, आध्यात्मिक और लौकिक।

क्योंकि जब प्रेरित ने कहा, "देखो, यहाँ दो तलवारें हैं।" प्रभु ने कोई उत्तर नहीं दिया। यह बहुत ज़्यादा है, लेकिन इतना ही काफी है।

आपको बस इतना ही अपने साथ ले जाना है। और यहाँ उसकी व्याख्या है। जब प्रभु ने कहा, देखो, यहाँ कलीसिया में दो तलवारें हैं, क्योंकि ये प्रेरित ही थे जिन्होंने बात की थी।

प्रभु ने कोई उत्तर नहीं दिया। यह बहुत ज़्यादा है, लेकिन यह पर्याप्त है। बोनिफेस की व्याख्या के अनुसार, दो तलवारों में से एक आध्यात्मिक तलवार है।

रोम का ईसाई जगत की आत्माओं पर अधिकार है। दूसरी तलवार है लौकिक तलवार। रोम का पृथ्वी पर सरकारों पर अधिकार है।

यह शक्ति का एक जबरदस्त दावा है। और सांसारिक प्रभुओं ने इसे नहीं सुना। उन्होंने विभिन्न नगर-राज्यों के राजकुमारों को स्वीकार नहीं किया, जो इससे बिल्कुल भी प्रभावित नहीं हुए और उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया।

फिर भी, यह आधिकारिक रोमन कैथोलिक शिक्षा है। विक्लिफ़, अब उनके बारे में अलग-अलग अनुमान हैं। और वह निश्चित रूप से कुछ मायनों में एक पूर्व-सुधारक थे।

पुनः, हम उनकी जन्म तिथि तो ठीक से नहीं जानते, लेकिन लगभग 1329 जानते हैं। हम यह जानते हैं कि उनकी मृत्यु 1384 में हुई थी। वे एक अंग्रेज विद्वान थे, जिनके अध्ययन ने उन्हें रोमन कैथोलिक चर्च की अधिकाधिक आलोचना करने के लिए प्रेरित किया।

उनकी निंदा की गई। उनके स्वयं के बाइबिल अध्ययन ने उन्हें कॉन्स्टेंस की परिषद से पुरोहिती की पवित्र शक्ति, ट्रांसबस्टैंटिएशन को अस्वीकार करने के लिए प्रेरित किया। मेरे पास तारीख ठीक से नहीं है।

रोमन कैथोलिक पादरी का अभिषेक, और यह कैनन कानून बन गया और रोम के अनुसार अभी भी मान्य है। अभिषेक समारोह, ऑर्डिनेंड में, पादरी को पापों को क्षमा करने की शक्ति प्राप्त होती है। विक्लिफ़ को बाइबल में ऐसा कुछ नहीं मिला।

न ही आपको वहाँ ट्रांसबस्टैंटिएशन मिलता है। और वास्तव में, उन्होंने क्रॉस की प्रभावकारिता पर भी सवाल उठाया। इन सभी बातों के कारण 1377 में रोम ने उनकी निंदा की।

इसलिए, अपने जीवन के आखिरी सात साल उन्होंने उस उद्धरण के तहत जिया। याद रखें, मैंने पहले कहा था, चर्च के भीतर सैद्धांतिक गिरावट और नैतिक पतन के समय में पूर्वनिर्धारित के ऑगस्टीनियन सिद्धांत की अपील की गई थी। तो, यह था।

इसलिए, विक्लिफ़ कहते हैं, चर्च, उद्धरण, उन सभी लोगों की सभा है जो उद्धार के लिए पूर्वनिर्धारित हैं। यह चर्च पर उनके ग्रंथ से है। यह ऑगस्टीनियन पूर्वनिर्धारित विषय है जिसे चर्च के नेताओं और विचारकों द्वारा संकट के समय में अपील की जाती है जहां विश्वासियों को ढूँढना या उन्हें झूठ से सच बताना मुश्किल होता है और इस तरह के संघर्ष चल रहे होते हैं।

उन्होंने ये शब्द उन सभी लोगों की सभा के लिए कहे थे जो उद्धार के लिए पूर्वनिर्धारित हैं। चर्च पर उनके ग्रंथ में यही चर्च है। उन्होंने ऑगस्टीन के साथ सहमति जताते हुए ऐसा कहा था।

मोक्ष, वह स्पष्ट था, वह स्पष्ट था। मोक्ष ईश्वर की कृपा से मिलता है, मानवीय प्रयास से नहीं। इन सब बातों ने न केवल उसे प्राप्त किया, बल्कि उसे चर्च द्वारा एक अवांछित व्यक्ति और निंदा का पात्र भी बना दिया।

जान हुस, 1373 से 1415 तक, एक प्रारंभिक चेक सुधारक थे। उन्होंने अपने शुरुआती 20 के दशक में धर्म परिवर्तन का अनुभव किया। विक्लिफ़ के विचार उनके लिए प्रभावशाली थे, खासकर चर्च की आध्यात्मिकता पर उनकी शिक्षाएँ।

फिर से, यह परमेश्वर के संप्रभु चुनाव से जुड़ा हुआ है। देखिए, क्योंकि हमारे आस-पास हालात बुरे दिखते हैं, लेकिन परमेश्वर के पास हमेशा उसके लोग होते हैं। हो सकता है कि वे छिपे भी हों, लेकिन परमेश्वर के पास वे लोग हैं जिन्हें उसने चुना है, चाहे हालात कैसे भी दिखें।

हुस को बहिष्कृत कर दिया गया। हुस को कॉन्स्टेंस की परिषद में सुरक्षित परामर्श और सुरक्षित मार्ग का वादा किया गया था, लेकिन आपको विधर्मियों से झूठ बोलने की अनुमति थी, यह आधिकारिक बयान था। उन्हें उनके विचारों के लिए बहिष्कृत कर दिया गया और उन्हें सूली पर जला दिया गया।

उनके कथन को सुनिए। मसीह के नाम पर एक साथ एकत्रित हुए दो धर्मी व्यक्ति मसीह को एक विशेष पवित्र चर्च के प्रमुख के रूप में स्थापित करते हैं। तो फिर, कठिन समय, पादरी की अनैतिकता, लोगों की अनैतिकता।

लोग ईसाई धर्म के सिद्धांतों को शायद ही समझ पाते हैं। यह बुरा लगता है। इसलिए, वह दो रास्ते अपनाता है।

बाहरी तौर पर, विश्वासियों की एक छोटी संख्या इकट्ठा होती है। वे छोटे झुंड हैं। वे बचे हुए लोग हैं।

वे परमेश्वर के लोग हैं। वे प्रभु से प्रेम करते हैं। चर्च मौजूद है।

धार्मिक दृष्टि से, मसीह के नाम पर एक साथ एकत्रित हुए दो धर्मी व्यक्ति मसीह के मुखिया के रूप में एक विशेष पवित्र चर्च का गठन करते हैं। लेकिन पवित्र कैथोलिक, जो सार्वभौमिक है, रोमन नहीं, मेरे शब्द, लेकिन उसका अर्थ है, लेकिन पवित्र कैथोलिक, जो सार्वभौमिक चर्च है, पूर्वनिर्धारित की समग्रता है, फिर से, चुनाव के लिए अपील करता है, या सभी पूर्वनिर्धारित वर्तमान, भूतकाल और भविष्य। यह उनकी पुस्तक, द चर्च से है, जो हस की पुस्तक, द चर्च में लिखी गई है, जो 1413 में लिखी गई थी।

बहुत पहले, उस दस्तावेज़ के पृष्ठ दो और तीन। एक धर्मी व्यक्ति संघर्ष कर रहा है और एक ही समय में विश्वास करने वाले चर्च और ईश्वर के चुनाव पर जोर दे रहा है। अब, लूथर से सुधार आया।

उनका ऐसा कोई इरादा नहीं था। उन्होंने जर्मनी में भोग-विलास की बिक्री के दुरुपयोग को सामने लाया। जिन लोगों को अपने बच्चों के लिए दूध खरीदने के लिए पैसे का इस्तेमाल करना चाहिए था, वे दादी-दादा को नरक से बाहर निकालने के लिए पैसे दे रहे थे।

और उसने सोचा, ओह, अगर रोम में पवित्र पिता को पता होता कि क्या हो रहा है, तो वह तुरंत इस पर रोक लगा देता, यह जाने बिना कि रोम में पिता का हाथ 50% छूट लेने के लिए तिजोरी में था। वैसे भी, लूथरन सुधार से एक मानक आया, सुधार ने प्रतीकों का उत्पादन किया। इसने विश्वास की स्वीकारोक्ति को जन्म दिया।

वे बच्चों को पढ़ाना चाहते थे। इसने धर्मशिक्षा, आस्था के स्वीकारोक्ति पर आधारित शिक्षण उपकरण और कभी-कभी धर्मशिक्षा के विभिन्न स्तरों का निर्माण किया। इसलिए प्रेस्बिटेरियन परंपरा में, बच्चों के लिए मूल रूप से छोटा धर्मशिक्षा और वयस्कों और बुजुर्गों के लिए बड़ा धर्मशिक्षा है।

1530 का ऑक्सबर्ग कन्फ़ेशन। मेलानचर्थॉन इसका लेखक था। लूथर का प्रतिभाशाली उत्तराधिकारी इसका लेखक था।

लेकिन विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि शिक्षा के लेखक मेलानचर्थॉन हैं, लेकिन शिक्षा लूथर की शिक्षा है। अनुच्छेद 8.7. मुझे खेद है, मुझे इस के बारे में और अधिक कहना चाहिए। मुझे यहाँ कुछ और नोट्स मिले।

मैं अपने तीर को ठीक से नहीं खोज पाया। मैं इस के बारे में स्पष्ट होना चाहता हूँ। वह कोई सुधारक नहीं है, ठीक है? आप उसे सुधारक से पहले का कह सकते हैं, और मैंने जो कुछ भी कहा वह अच्छा है, है न? लेकिन अगर आप उसे उसके अपने ऐतिहासिक संदर्भ में देखें, तो उसकी अपनी मान्यताएँ इंजील और पारंपरिक कैथोलिक सिद्धांतों का मिश्रण थीं।

मेरा मतलब है, आप क्या उम्मीद करेंगे? लूथर द्वारा पूरी बात को तहस-नहस करना एक साथ नहीं हुआ। बहस में, रोमन कैथोलिक वाद-विवादकर्ताओं ने उसे इस हद तक धकेल दिया कि उसे सोला स्क्रिप्टुरा की स्थिति में जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। क्या आप यह कह रहे हैं कि परिषदें और पोप गलतियां कर सकते हैं? अब, एक भिक्षु के रूप में, वह ऐसा कुछ नहीं कहेगा जो वह आसानी से कहेगा।

लेकिन जब उसे धक्का दिया गया, तो उसने कहा कि अगर बाइबल स्पष्ट है, और अगर वे बाइबल से असहमत हैं, तो हाँ, वे गलत कर सकते हैं। इसने उसे वहीं विधर्मी बना दिया। उसकी शिक्षा और उसके विचार आगे बढ़े, और उसे कीड़ों के बाद मार दिया गया होता, अगर उसके अपने राजकुमार ने उसका अपहरण नहीं कर लिया होता।

मुझे यकीन है कि उसे लगा कि वह मर चुका है और वह उस महल में छिपा हुआ है जहाँ उसने बाइबल का अनुवाद किया था और इसी तरह की दूसरी चीजें। बहुत हो गया। इसलिए, ईमानदारी से कहें तो इस कोई लूथर नहीं है।

हालाँकि, जब लूथर को गुस्सा आ रहा था, तो उन्होंने कहा कि वे कहते थे, क्या तुम अकेले ही इन बातों पर विश्वास करते हो? किसी ने भी उस पर विश्वास नहीं किया। वह पुस्तकालय में गया और पढ़ा, और इस के पास भी कुछ ऐसे ही विचार थे। इसलिए, वह एक पूर्व-सुधारक था।

यह कोई अनुचित पदनाम नहीं है। फिर भी, इस की अपनी विश्वास प्रणाली में इंजील और रोमन कैथोलिक सिद्धांत थे। लेकिन उन्होंने वचन का प्रचार करने पर जोर दिया।

उनके पास चर्च के बारे में कमोबेश बाइबिल का दृष्टिकोण था। यही बातें हमने उद्धृत की हैं। और विश्वासियों का सार्वभौमिक पुरोहितत्व।

तो, रोमन कैथोलिक, निश्चित रूप से, अभी भी। लेकिन कुछ वाकई दिलचस्प पूर्व-सुधार तरीकों से आगे बढ़ रहा है। ऑक्सबर्ग कन्फ़ेशन, अनुच्छेद 7। हमारे बीच यह भी सिखाया जाता है कि

एक पवित्र ईसाई चर्च, आप देखिए, कॉन्स्टेंटिनोपल, कॉन्स्टेंटिनोपोलिटन पंथ, का इतना प्रभाव है।

ओह, आप बिल्कुल सही हैं। बिल्कुल सही। 381.

आज, सभी अलग-अलग विचारधाराओं की धर्मशास्त्र की पुस्तकों में, आपके पास एक अनुभाग है। चर्च की विशेषताएँ। एकता।

पवित्रता. कैथोलिकता. धर्मत्यागीता.

और यह सही भी है। पिता जानते थे कि वे किस बारे में बात कर रहे थे। एक पवित्र ईसाई चर्च है, जो हमेशा रहेगा और रहेगा।

ऑक्सबर्ग। यह सभी विश्वासियों की सभा है। विश्वास करने वाला चर्च।

उदाहरण के लिए, उनमें से कुछ हुस से जुड़े हैं। हालाँकि मुझे नहीं लगता कि वे हुस के बारे में जानते थे। जिनके बीच सुसमाचार को उसकी शुद्धता में प्रचारित किया जाता है और पवित्र संस्कार सुसमाचार के अनुसार प्रशासित किए जाते हैं।

यह चर्च के लक्षणों का बीज है। सुधारकों ने चर्च की विशेषताओं पर निर्माण किया। लेकिन उन्हें इसके लिए तरीके खोजने पड़े।

आप सच और झूठ में कैसे फर्क करेंगे? यह मुश्किल था। लूथर और केल्विन दोनों ने खुद कुछ रोमन कैथोलिक पादरियों को ईश्वर के आदमी और कुछ रोमन कैथोलिक मण्डलियों को चर्च के रूप में स्वीकार किया। बाइबिल, इंजील चर्च के रूप में।

तो, यह एक गड़बड़ है। आप इसे कैसे सुलझाएँगे? उन्होंने निशान बनाए हैं। और सबसे महत्वपूर्ण निशान है वचन की शुद्ध शिक्षा।

दूसरा चिह्न संस्कारों का उचित प्रशासन था। तीसरा चिह्न चर्च अनुशासन था। यहाँ आपके पास दो चिह्न हैं।

हमारे बीच यह भी कहा जाता है कि एक पवित्र ईसाई चर्च हमेशा के लिए रहेगा। क्योंकि यीशु ने कहा कि नरक के द्वार मेरे चर्च के खिलाफ प्रबल नहीं होंगे। यह सभी विश्वासियों की सभा है जिनके बीच सुसमाचार को उसकी शुद्धता में प्रचारित किया जाता है, और पवित्र संस्कार सुसमाचार के अनुसार प्रशासित किए जाते हैं।

क्योंकि ईसाई चर्च की सच्ची एकता के लिए यह पर्याप्त है कि सुसमाचार का प्रचार उसकी शुद्ध समझ के अनुरूप किया जाए। और यह कि संस्कार ईश्वरीय वचन के अनुसार प्रशासित किए जाएं। ईसाई चर्च की सच्ची एकता के लिए यह आवश्यक नहीं है कि मनुष्यों द्वारा स्थापित समारोहों को सभी स्थानों पर समान रूप से मनाया जाए।

लूथरन इस शुरुआती समय में क्या कर रहे हैं? 1517 में लूथर ने थीसिस को सही साबित किया। यह 1530 है। यह काफी शुरुआती समय है।

वे कह रहे हैं कि कुछ चीजें दूसरों से ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं। और चर्च सरकार या अन्य चीज़ों के विवरण हो सकते हैं जो समान नहीं हैं। यह ज़रूरी नहीं है।

यह वैसा ही है जैसा कि पौलुस ने इफिसियों 4:4 और 5 में पत्र का हवाला देते हुए कहा है, एक शरीर और एक आत्मा है, ठीक वैसे ही जैसे तुम्हें एक ही आशा में बुलाया गया है जो तुम्हारे बुलावे से संबंधित है, एक प्रभु, एक विश्वास, एक बपतिस्मा। यह चर्च की एकता के लिए बाइबिल का प्रमाण है, जिसे हम बाद में संबोधित करेंगे। ऑग्सबर्ग का आठवाँ अनुच्छेद, ऑग्सबर्ग स्वीकारोक्ति 1530।

फिर से, हालाँकि ईसाई चर्च, सही मायने में, सभी विश्वासियों और संतों की सभा के अलावा और कुछ नहीं है। फिर भी, इस जीवन में, कई झूठे ईसाई, पाखंडी और यहाँ तक कि खुले पापी भी ईश्वरीय लोगों के बीच रहते हैं। संस्कार प्रभावशाली होते हैं, भले ही उन्हें संचालित करने वाले पुजारी दुष्ट व्यक्ति हों।

क्योंकि जैसा कि मसीह ने स्वयं संकेत दिया, फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं, मत्ती 23:2। यह क्या है? यह ऑग्सबर्ग की ऑगस्टीनियन सिद्धांत की अपील है, जो मिश्रित कंपनी के बारे में बाइबल को दर्शाता है। समझे? सच्चे विश्वासी ही चर्च का निर्माण करते हैं। फिर भी, ईश्वरीय लोगों में झूठे ईसाई, पाखंडी और यहाँ तक कि खुले आम पापी भी हैं।

क्या नए नियम में ऐसा नहीं था? हाँ, 1 कुरिन्थियों 5. पॉल कहते हैं कि अपने बीच से उस आदमी को निकाल दो जो अपनी माँ और सौतेली माँ के साथ रहता है, जिस तरह एक आदमी अपनी पत्नी के साथ रहता है। तदनुसार, अभी भी, ऑग्सबर्ग, डोनाटिस्ट के विद्वत्तावादी, और अन्य सभी जो विपरीत विचार रखते हैं, उनकी निंदा की जाती है। वह अंतिम भाग कह रहा है कि एक असंरक्षित व्यक्ति भी सच्चा सुसमाचार प्रचार कर सकता है, और यदि वे ऐसा करते हैं, तो आप बचाए जा सकते हैं।

और डोनाटिस्ट विवाद, विभाजन का एक और जवाब, ठीक है? डोनाटस का अनुसरण करने वाले विभाजनवादियों, जिन्हें डोनाटिस्ट कहा जाता है, ने कहा कि उत्पीड़न शांत होने के बाद, किसी भी व्यक्ति को पादरी द्वारा बपतिस्मा दिया जाता है, एक पुजारी द्वारा जिसने उत्पीड़न में मसीह को अस्वीकार कर दिया, वह बपतिस्मा अमान्य है। ऐसा है, समझे? और यदि आप उस व्यक्ति द्वारा प्रचारित सुसमाचार पर विश्वास करते हैं, तो आप बचाए नहीं गए हैं। खैर, संत ऑगस्टीन ने कहा, नहीं, नहीं।

जब ईश्वरीय लोग सुसमाचार का प्रचार करते हैं तो हम खुश होते हैं। हम उन लोगों के लिए कभी खुश नहीं होते जो चूक जाते हैं। लेकिन फिर भी, सुसमाचार और संस्कार मनुष्यों के नहीं हैं।

यह यीशु का सुसमाचार है। यह यीशु के अध्यादेश हैं, और वे उस व्यक्ति की जीवनशैली की परवाह किए बिना मान्य हैं जिसने उन्हें दिया। वह चर्च की दुष्टता को प्रोत्साहित नहीं कर रहा है, ठीक है? लेकिन वह कह रहा है कि परमेश्वर के वचन में एक वस्तुनिष्ठता है।

और कोई बात नहीं, आपको उस व्यक्ति का पूरा जीवन डर के मारे ध्यान में रखने की ज़रूरत नहीं है जिसने आपको सुसमाचार दिया या जिसने आपको बपतिस्मा दिया ताकि अगर वे वास्तव में कोई गलती करते हैं तो आपका बपतिस्मा अमान्य हो जाए। नहीं, नहीं। यह शब्द और संस्कार दोनों की गलतफहमी है।

1560 का स्कॉट्स कन्फेशन, यानी 30 साल और। कैल्विन की तिथियाँ 1509 से 1564 हैं। तो, सुधारित चर्च आगे बढ़ रहा है, और स्कॉटलैंड ने वास्तव में सुधारित विश्वास को अपनाया है।

1646 में वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ़ फेथ तक स्कॉटिश कन्फेशन अंग्रेजी बोलने वालों के बीच मानक था। अब, मुझे आपको कुछ बताना है। स्कॉट्स सॉफ्टबॉल नहीं खेलते हैं।

ओह, वे झपट्टा मारते हुए बाहर आते हैं, जैसा कि आप देखेंगे। वाह। 1560 का स्कॉट्स कन्फेशन, अनुच्छेद 16।

जैसा कि हम एक ईश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में विश्वास करते हैं, त्रित्ववादी जोर पर ध्यान दें। हम सबसे अधिक लगातार विश्वास करते हैं कि शुरू से ही, एक किर्क था, अब है, और दुनिया के अंत तक एक ही रहेगा। चर्च के लिए स्कॉटिश शब्द। वे जो कह रहे हैं, वह यह है कि आदम और हव्वा किर्क का हिस्सा थे।

वे कह रहे हैं, जैसा कि मैंने कहा है, परमेश्वर के पुराने और नए नियम के लोगों के बीच एकता है। कहने का मतलब है, परमेश्वर द्वारा चुने गए लोगों की एक टोली और भीड़, जो कि पूर्वनिर्धारित है, जो मसीह यीशु में सच्चे विश्वास के द्वारा सही तरीके से उसकी आराधना करते हैं और उसे अपनाते हैं। विश्वास करने वाले चर्च, तो आपके पास दोनों कोण हैं, समझे? परमेश्वर की संप्रभुता, मानवीय विश्वास, सच्चा विश्वास।

परमेश्वर की संप्रभुता सिर्फ़ एक सिद्धांत नहीं है। इसका परिणाम यह होता है कि लोग विश्वास करते हैं। और वे सिर्फ़ अपने आप विश्वास नहीं करते।

परमेश्वर ने उन्हें चुना और उनमें कार्य किया, जिससे वे विश्वास करें। जो मसीह यीशु पर सच्चे विश्वास के द्वारा सही ढंग से उसकी आराधना करते और उसे अपनाते हैं। जो उसी गिरजे का एकमात्र सिर है, जो मसीह यीशु की देह और जीवनसाथी भी है?

कौन सा चर्च कैथोलिक है? आपको क्या लगता है कि वे आगे क्या कहने जा रहे हैं? ओह हाँ, आपको पोप को पिंडलियों में लात मारनी चाहिए। कौन सा चर्च कैथोलिक है? यह सार्वभौमिक है क्योंकि इसमें सभी युगों और सभी क्षेत्रों, राष्ट्रों और भाषाओं के चुने हुए लोग शामिल हैं। तो चाहे वे यहूदी हों या अन्यजाति, जिनका परमेश्वर पिता और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ संगति और समाज है।

अपने बेटे, मसीह यीशु के साथ, अपनी पवित्र आत्मा के पवित्रीकरण के माध्यम से। वाह! वे चर्च को त्रिएकत्व के साथ एकता और फिर से त्रित्ववाद के संदर्भ में परिभाषित कर रहे हैं। मसीह के साथ एकता त्रिएकत्व के साथ एकता है।

ईश्वर एक है। व्यक्ति अविभाज्य हैं। और फिर, त्रित्ववाद।

इसलिए, इसे अपवित्र व्यक्तियों का नहीं, बल्कि संतों का मिलन कहा जाता है। स्कॉट लोग चर्च अनुशासन के मामले में बहुत सख्त थे और लोग सिर्फ यह नहीं कहते थे कि वे ईसाई हैं, बल्कि मसीह के लिए जीते हैं। वे चर्च अनुशासन के मामले में बहुत सख्त हो सकते थे।

अपवित्र व्यक्तियों का नहीं, बल्कि संतों का, संतों का समुदाय, जो स्वर्गीय यरूशलेम के नागरिक होने के नाते, सबसे अमूल्य लाभों का फल प्राप्त करते हैं। अर्थात्, इसका अर्थ है, एक ईश्वर, एक प्रभु यीशु, एक विश्वास, मैं फिर से इफिसियों 4 सुनता हूँ, एक बपतिस्मा, जिसमें से चर्च, न तो जीवन है और न ही शाश्वत सुख, खुशी। और इसलिए, यहाँ हम जाते हैं, हम उनकी निन्दा से पूरी तरह घृणा करते हैं।

मैं चाहता हूँ कि ये लोग वही कहें जो वे मानते हैं और इधर-उधर की बातें करना बंद करें। वाह! हम उन लोगों की ईशनिन्दा से पूरी तरह घृणा करते हैं जो यह कहते हैं कि जो लोग समानता और न्याय के अनुसार जीते हैं, वे बच जाएँगे, चाहे उन्होंने किसी भी धर्म को क्यों न अपनाया हो। ओह, अंग्रेजी भाषा विकसित हुई, और वह कभी भी इस बिंदु पर क्या से अलग हो गई।

इसका मतलब है कि वे बहुलतावाद के विरोधी हैं, ठीक है? सिर्फ इसलिए कि आप एक ईश्वरीय सत्ता में विश्वास करते हैं, आप बच नहीं सकते। क्योंकि जैसे मसीह यीशु के बिना न तो जीवन है और न ही उद्धार, वैसे ही कोई भी इसका भागीदार नहीं होगा, लेकिन जिन्हें पिता ने अपना पुत्र मसीह यीशु दिया है, और जो समय आने पर उसके पास आते हैं, उसके सिद्धांत को स्वीकार करते हैं, और उस पर विश्वास करते हैं। यह जॉन के सुसमाचार से ली गई भाषा है।

यूहन्ना के चुनाव के विषयों में से एक है पिता द्वारा लोगों को पुत्र को देना। यूहन्ना 6 में, पुत्र के पास आने का अर्थ है पुत्र पर विश्वास करना। वाह! फिर से, यह बाइबल से भरा हुआ है।

अब इसे देखिए। जो लोग समय के साथ उस पर विश्वास करते हैं, हम बच्चों को वफादार माता-पिता के साथ समझते हैं। स्कॉट का कबूलनामा दो अर्थों में वाचा-संबंधी है।

यह ईश्वर के लोगों को ईडन गार्डन से जोड़ता है। यह ईश्वर के एक लोग हैं, और इसमें वह है जिसे मैं परिवार का धर्मशास्त्र कहता हूँ। इसमें बच्चे भी शामिल हैं।

क्या यह कह रहा है कि बच्चों को विश्वास करने की ज़रूरत नहीं है? बेशक, यह ऐसा नहीं कह रहा है, लेकिन यह कह रहा है कि बच्चे ईश्वर की अनुग्रह की वाचा में शामिल हैं। यह चर्च अदृश्य है, जिसे केवल ईश्वर, अदृश्य चर्च ही जानता है, जो अकेले ही जानता है कि उसने किसे चुना है और समझता है, ऐसा कहा जाता है, चुने हुए लोग जो चले गए हैं, यानी जो मर गए हैं, जिन्हें आम

तौर पर चर्च विजयी कहा जाता है, और वे जो अभी भी जीवित हैं और पाप और शैतान के खिलाफ लड़ते हैं, जैसा कि आगे चलकर जीवित रहेंगे - स्कॉट का कबूलनामा 1560।

ओह, मुझे पता है कि यह उन्हीं नोटों का बाद का भाग है जहाँ वे रोम के खिलाफ जाते हैं। वाह, वे रोम की धजियाँ उड़ाते हैं। और स्कॉटिश लोगों को रोम ने मार डाला था।

यह समझ में आता है। 1561 का बेल्जिक कन्फेशन तीन सुधारित प्रतीकों में से एक है जिसे आज भी सुधारित ईसाईयों द्वारा एकता के तीन रूप कहा जाता है। प्रेस्बिटेरियन परंपरा स्कॉटलैंड और लंदन में वेस्टमिंस्टर असेंबली मीटिंग से आती है।

इसके सैद्धांतिक मानक वेस्टमिंस्टर मानक, वेस्टमिंस्टर आस्था का स्वीकारोक्ति, वेस्टमिंस्टर लघु धर्मशिक्षा और वेस्टमिंस्टर बड़ा धर्मशिक्षा हैं। प्रेस्बिटेरियन लोगों के विरुद्ध ईसाई धर्म में सुधार करने वाले एकता के तीन रूप महाद्वीपीय यूरोप से आते हैं, न कि इंग्लैंड, और स्कॉटलैंड, और हॉलैंड, उदाहरण के लिए। उह, एकता के तीन रूप बेल्जिक स्वीकारोक्ति हैं, जिससे मैं एक पल में उद्धरण देने जा रहा हूँ, हीडलबर्ग धर्मशिक्षा, और कैनन, डॉर्ट के धार्मिक कथन।

बेल्जिक स्वीकारोक्ति, हीडलबर्ग कैटेकिज्म, डॉर्ट के सिद्धांत। हीडलबर्ग कैटेकिज्म, बेल्जिक स्वीकारोक्ति, 1561. मूलतः, स्कॉट्स स्वीकारोक्ति के समान ही समय।

अनुच्छेद 27, हम एक एकल कैथोलिक या सार्वभौमिक चर्च, सच्चे ईसाई विश्वासियों की एक पवित्र मण्डली और सभा में विश्वास करते हैं और उसे स्वीकार करते हैं, जो यीशु मसीह में अपने संपूर्ण पवित्रीकरण की प्रतीक्षा कर रहे हैं, उनके रक्त से धुल रहे हैं, और पवित्र आत्मा द्वारा पवित्र और मुहरबंद हैं। यह इन दस्तावेजों में मुहर लगाने का पहला उल्लेख है। मैं वास्तव में इसकी सराहना करता हूँ।

इफिसियों 1, इफिसियों 4, और 2 कुरिंथियों 1 में मुहर लगाने का उल्लेख किया गया है। यह बताता है कि परमेश्वर अपने लोगों को पवित्र आत्मा देकर उन्हें बचाए रखता है। यह थोड़े से तरीके से उन्हें परमेश्वर के लोगों के रूप में पहचाने जाने की बात भी करता है। यह चर्च दुनिया की शुरुआत से ही अस्तित्व में है और अंत तक बना रहेगा।

वाचाबद्ध, परमेश्वर के एक लोग, अंत तक बने रहेंगे। यीशु का कथन, मैं अपना चर्च बनाऊंगा, नरक के द्वार उस पर हावी नहीं होंगे, जैसा कि इस तथ्य से प्रकट होता है कि मसीह शाश्वत राजा है और बिना प्रजा के नहीं रह सकता। यही जॉन कैल्विन की शिक्षा है।

मसीह शाश्वत राजा है। उसके पास प्रजा होनी चाहिए। इसलिए, परमेश्वर के लोग एक ही हैं।

क्या यह कहना सही है कि हमें ऐसा नहीं करना चाहिए? क्या परमेश्वर के लोगों के बीच कोई विसंगति नहीं है? हाँ, है। लेकिन ये दस्तावेज़ पुराने और नए नियम के परमेश्वर के लोगों के बीच निरंतरता पर ज़ोर देते हैं। और यह पवित्र चर्च परमेश्वर द्वारा पूरी दुनिया के क्रोध के विरुद्ध सुरक्षित रखा गया है, भले ही कुछ समय के लिए यह मनुष्यों की नज़र में बहुत छोटा दिखाई दे, जैसे कि इसे बुझा दिया गया हो।

और इसलिए, यह पवित्र चर्च किसी निश्चित स्थान या निश्चित व्यक्तियों तक सीमित, बंधा हुआ या सीमित नहीं है, बल्कि पूरे विश्व में फैला हुआ और फैला हुआ है, हालांकि अभी भी दिल और इच्छा में एक ही आत्मा, कैपिटल एस, विश्वास की शक्ति से जुड़ा हुआ और एकजुट है। हमारे अगले व्याख्यान में, हम वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ फेथ पर चर्चा करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा चर्च और अंतिम चीजों के सिद्धांतों पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 7 है, चर्च का ऐतिहासिक धर्मशास्त्र।